ओमशांति। मीठे–2 रूहानी सिकीलधे बच्चे यह तो जानते हैं कि हम अपने(ी) दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। इसमें राजाएँ भी हैं तो प्रजा भी हैं। पुरुषार्थ तो सभी करते हैं। जो जास्ती पुरुषार्थ करते हैं वह जास्ती प्राइज़ पाते हैं। यह तो एक कॉमन कायदा है। यह कोई नई बात नहीं। इसको दैवी बग़ीचा कहो, देवताओं का बग़ीचा कहो वा राजधानी कहो अभी यह है कलियुगी बग़ीचा। अथवा कांटों का जंगल। उसमें भी कोई बहुत फल देने वाले झाड़ होते हैं, कोई कम फल देने वाले होते हैं। कोई अपुसी आम होते हैं, कोई आम होते हैं, कोई संतरे होते। फूलों की(के) फलों की(के) ऐसी(से) ही भिन्न प्रकार के झाड़ होते हैं। वैसे ही तुम बच्चों में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं। कोई बहुत अच्छा फल देते हैं, कोई हल्का फल देते हैं। भिन्न–2 झाड़ होते हैं ना। यह भी फल देने वाला बग़ीचा है। इस दैवी झाड़ की स्थापना हो रही है। अथवा फूलों की(के) बग़ीचा की स्थापना हो रही है कल्प पहले मिश(स)ल। आते–2 मीठे खुशबूएंदार भी बन रहे हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सभी वैरायटी है ना। बाप के पास भी आते हैं बाप का मुखड़ा देखने। यह तो ज़रूर समझते हो बाबा हमको स्वर्ग़ का मालिक बनते हैं। बेहद का मालिक बनने में खुशी भी होती है ना। हद के मालिकपने में है दुःख। यह भी बच्चे समझते हैं यह खु(खे)ल ही सुख और दुःख का बना हुआ है और यह भी भारतवासियों के लिए है। विलायत वालों के लिए तो ख़्याल भी नहीं किया जाता। पहले अपना घर तो सम्भालो। घर पर धणी की नज़र रहती है ना। तो बाप भी बैठकर एक–एक बच्चे को देखते हैं। इनमें कौन–2 से गुण हैं और कौन–सी अवगुण हैं। बच्चे खुद भी जानते हैं। बच्चों को बाबा कहे, कि सभी अपनी–2 ख़ामियाँ आपे ही लिखकर आओ तो झट लिख सकते है। हम अपने में क्या–2 ख़ामी समझते हैं। कोई न कोई ख़ामी है ज़रूर। सम्पूर्ण तो कोई भी बने नहीं हैं। हां, बनने ज़रूर हैं। कल्प–2 बने हैं। इसमें कोई संशय नहीं; परंतु इस समय क्या–2 ख़ामी है वह बतलाने से बाबा इस पर भी समझावेंगे। इस समय तो बहुत ख़ामियाँ हैं। मुख्य सभी ख़ामियाँ होती हैं देह अभिमान के कारण। वह फिर बहुत हैरान करते हैं। अवस्था को आगे बढ़ने नहीं देते हैं; इसलिए पूरी रीत पुरुषार्थ करना है। यह शरीर भी तो छोड़कर जाना है, दैवी गुण भी यहां ही धारण करके जाना है। कर्मातीत अवस्था में जाने का अर्थ भी बाबा समझा रहे हैं। कर्मातीत होकर जाना है तो कोई भी फ़िलो न रहे; क्योंकि तुम हीरे बनते हो ना। हमारे में क्या–2 कमी है यह तो हरेक जानते हैं; क्योंकि तुम तो चैतन्य हो ना। जड़ हीरों में ख़ामी होगा(ी) तो वह निकाल नहीं सकेंगे। तुम तो चैतन्य हो। तुम उस ख़ामी को निकाल सकते हो। तुम कौड़ी से हीरों(ा) बनते हो। तुम अपन को अच्छी रीत जानते हो। सर्जन पूछते हैं कौन–सी ख़ामी है जो तुमको अटक डालते हैं। आगे बढ़ने नहीं देते हैं। ख़ामी रहित तो पिछाड़ी में बनना है ना। वह सभी अभी निकालना है। अगर ख़ामी नहीं निकालते तो फिर हीरों(कौड़ी) की कीमत हो जाती है। यह भी बड़ा पक्का जवाहरी है ना। सारी आयु हीरे ही इन आँखों से देखे हैं। ऐसा जवाहरी कोई होगा नहीं जिसको इतना हीरों को परखने का शौक हो। तुम भी हीरे बन रहे हो। जानते हो कोई न कोई ख़ामी है ज़रूर। सम्पूर्ण बने नहीं हैं। चैतन्य होने कारण पुरुषार्थ से तुम ख़ामी निकाल सकते हो। हीरे जैसा तो बनना है ज़रूर। सो तब बनेंगे जब पूरा पुरुषार्थ करेंगे। बाप कहते हैं तुम्हारी अवस्था ऐसी पक्की होनी चाहिए जो शरीर छूटने समय, अंत में कोई भी याद न आये। यह तो क्लीयर है। मित्र–सम्बंधी आदि सभी से रग तोड़ना है। सम्बंध रखना ही है एक बाप से। अभी तुम हीरे बन रहे हो। यह जवाहरात का(ी) दुकान है। तुम एक–एक जवाहरी हो। यह बातें दूसरा(रे) कोई भी जानते नहीं। साधु–सन्यासी आदि कुछ नहीं जानते। वह थोड़े ही ऐसे कहेंगे कि बाबा बैठा है वह समझ है। कोई कह न सके। हम सभी का बाप है। वह तो कुछ भी नहीं जानते। तुम बच्चे जानते हो, हरेक की दिल में है हम विश्व के मालिक बन रहे हैं। पुरुषार्थ अनुसार बनने हैं। जिन्हों को ऊँच पद मिला है उन्होंने ज़रूर पुरुषार्थ किया है। हैं तो तुम्हारे में से ही ना। तुम बच्चों को ही इतना पुरुषार्थ करना है। कल्प पह(ले)

मिश(स)ल पुरुषार्थ करेंगे ज़रूर; इसलिए बाबा एक–एक बच्चे को देखते रहते हैं। जैसे फूलों को देखा जाता है ना यह कैसा खुशबूएं दार फूल है, यह कैसा है, इनमें बाकी क्या खिट–2 है; क्योंकि तुम चैतन्य हो ना। चैतन्य हीरे जान सकते हैं हमारे में क्या–2 ख़ामियाँ हैं, जो बाप से बुद्धि योग तोड़कर कहां न कहां भटकते हैं। बाप तो कहते हैं बच्चे मामेकं याद करो। दूसरा कोई भी याद न आये। गृहस्थ व्यवहार में रहते एक बाप को ही याद करना है। इन्हों की तो भट्ठी बननी थी जो तैयार हो निकले हो सर्विस करने लिए। देखते हैं पुरानी(ने)–2 जो हैं वह अच्छी रीत सर्विस कर रहे हैं। थोड़े नये भी एड होते जाते हैं। पुरानों की भट्ठी बनी थी। भल पुराने हैं उनमें भी तो ख़ामियाँ हैं ज़रूर। हरेक अपने दिल में समझते हैं कि बाबा जो अवस्था बनाने के लिए कहते हैं वह अज(जु)न बनी नहीं है। एमऑबजेक्ट तो बाप समझाते हैं सभी से जास्ती खाद है देह अभिमान। तब ही देह के तरफ बुद्धि चली जाती है। देह में होते हुये देही अभिमानी बनना है। इन आँखों से देखने की चीज़ कोई भी सामने नहीं आये। ऐसी अपनी अवस्था जमानी है। हमारी बुद्धि में सिवाय बाप के और शांतिधाम के और कोई भी वस्तु पिछाड़ी में याद न आये। कुछ भी साथ नहीं ले जाना है। जैसे पवित्र होकर आये वैसे ही पवित्र होकर जाना है। पहले–2 हम नये सम्बंध में आये। अभी है पुराना सम्बन्ध। पुराने सम्बंधी ज़रा भी याद न आयें। गायन भी है ना अंतकाल..... यह अभी की बात है। गीत तो कलियुगी मनुष्यों ने बनाई है; परंतु वह समझते थोड़े ही हैं। मूल बात बाबा समझाते हैं एक बाप के सिवाय और कोई भी याद न आये। एक बाप की ही याद से तुम्हारे पाप कट जावेंगे और पवित्र हो जावेंगे। पवित्र हीरे बन जावेंगे। कोई–2 पत्थर बहुत कीमती होती है। माणिक की भी कीमत होती है ना। बाप अपने से भी बच्चों की वैल्यु ऊँच करते रहते हैं। अपनी जांच करनी होती है। बाप कहते रहते हैं अंतर्मुख हो अपने को देखते रहो। हमारे में क्या–2 ख़ामी है। कहां तक देह अभिमान है। अभी सम्पूर्ण बनने में तो टाइम पड़ा हुआ है। पुरुषार्थ के लिए बाबा भिन्न युक्तियाँ समझाते रहते हैं। जितना हो सके एक बाप की ही याद रहे। भल कितने भी प्यारी हो या प्यारियाँ हो। बहुत सुंदर बच्चे बहुत लवली हो, स्त्री–पुरुष का आपस में बहुत लव हो तो भी कोई की याद न आये। यहां का कोई भी चीज़ याद न आये। कोई–2 का बच्चों में भी बहुत मोह होता है। बाप कहते हैं उन सभी से हटाकर एक की याद रखो। एक लवली बाप से ही प्यार रखना है। उनसे ही सभी कुछ मिल जाता है। योग से ही तुम लवली बनते हो। लवली आत्मा बनती है। बाप लवली प्योर है ना। आत्मा आत्मा को पवित्र बनाने लिए, लवली बनाने लिए कहते हैं बच्चे जितना मुझे याद करेंगे तुम अथाह लवली बनेंगे। तुम इतना लवली बनते हो जो तुम देवी–देवताओं की पूजा अभी तक हो रही है। बहुत लवली बने हो ना। आधा कल्प तुम राज्य करते हो। आधा कल्प फिर तुम ही पूजे जाते हो। तुम खुद ही पुजारी बन अपने चित्रों को पूजते हो। इतने तुम लवली बनते हो। तुम हो सबसे लवली बनने वाले। तुम अपनी जांच करो। लवली बाप को अच्छी रीत याद करेंगे तो लवली होंगे। सिवाय एक बाप के और कोई याद न आये। बाप को बहुत–2 लव से याद करना है। बाप की याद में बैठे–2 प्रेम की आँसू आ जाये। तूफान तो बहुत आते हैं ना। अपने ऊपर बहुत जांच रखनी है। हमारा लव बाप के सिवाय और कोई तरफ तो नहीं जाता है। भल कितनी भी अच्छी प्यारी चीज़ हो तो भी एक बाप जतना प्यार कोई से नहीं। तुम सभी एक माशुक के आशुक बनते हो। आशुक–माशुक जो होते हैं एक बारी एक–दो को देख लिया, बस शादी आदि कुछ नहीं। रहते भी अलग हैं; परंतु एक/दो की याद बुद्धि में रहती है। अभी तुम बच्चे जानते हो हम सभी आशुक हैं एक माशुक के। उस माशुक को तुमने भक्ति मार्ग में भी बहुत याद किया है। यहां तो बहुत याद करना है। जबकि वह सम्मुख पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारा बेड़ा पार है। इनमें संशय की कोई बात नहीं। भगवान से मिलने लिए सभी भक्ति करते हैं। यह भक्ति फिर भी होनी ही है। यह तुम समझते हो नम्बरवार।

सर्विस भी नम्बरवार ही करते हैं। कोई–कोई तो बहुत हड्डी सर्विस करते हैं। सर्विस के लिए ही जैसे कि एकदम तरफते(तड़पते) हैं। बहुत मेहनत करते हैं। यह भी तुम जानते हो बड़े–2 आदमी इतना नहीं उठेंगे। वह कम दर्जा पावेंगे। तुम्हारा मेहनत कोई व्यर्थ नहीं जावेगा। कोई समझ कर लायक होते हैं फिर बाबा के आगे आते हैं। तुम समझ सकते हो यह लायक है वा नहीं। समझो तुमको कहते हैं हम सुबह के क्लास में आना चाहते हैं। बाबा की मुरली सुनूँ। तुम ना नहीं कह सकते हो। बिठना ही पड़े। आठ/दस दिन समझा दिया और आकर बैठे तो हर्जा नहीं। तुम फॉर्म तो भराते ही हो। जिससे सारा मालूम पड़ जाता है। बाबा दिल में समझते तो है ना। दृष्टि तो उन्हों को तुम बच्चे(ों) से मिलती ही है। श्रृंगार करने वाले तुम बच्चे हो। जो भी यहां आये हैं उन सभी को तुम बच्चों ने ही श्रृंगार कराया है ना। बाबा ने तुमको कराया तुम फिर औरों को श्रृंगार कराकर ले आये हो। बाबा आफिरीन देते हैं। जैसे–2 श्रृंगार किया है ऐसा ही औरों को भी कराते हैं। बल्कि अपने से भी अच्छा औरों को कराते हैं। सभी की अपनी–2 तकदीर है ना। कोई–2 समझने वाले समझाने वाले से भी तीखे हो जाते हैं। समझते हैं अनसे(उनसे) तो हम अच्छा समझा सकते हैं। दिल में आता है, हम बहुत अच्छा रसीला समझा सकते हैं। समझाने का नशा चढ़ता है। फिर तो वह निकल पड़ते हैं। बापदादा दोनों के ही दिल पर चढ़ पड़ते हैं। बहुत नये–2 हैं जो पुराने से भी तीखे हैं। कांटों से अच्छा फूल बन पड़े हैं; इसलिए बाबा एक–एक को बैठकर देखते हैं। बागवान है ना। दिल होती है उठकर, जाकर पिछाड़ी में देखूँ; क्योंकि पिछाड़ी में भी जाकर बैठते हैं। अच्छे–2 महारथियों को तो फ्रंट में बैठना चाहिए। नहीं तो फिर ढूँढ़ते हैं। यह फूल कहां है। बच्चे भी समझते हैं बाबा को खुशबूएंदार फूल चाहिए। इसमें तो किसको धक्का आने की तो बात ही नहीं। अगर धक्का आवेगा, रूठेगा तो अपने तकदीर से ही रूठते हैं। सामने क्लों को देख अथाह खुशी होती है। यह भी बहुत अच्छा सर्विसएबुल है। इसमें थोड़े ही डिफेक्ट है। यह बहुत अच्छा, साफ है। इनमें अन्दर सारी जाली जमी पड़ी है। तो वह सारा किचड़ा निकालना है। बाप जैसा लवलीएस्ट बनना है। अभी कोई बना नहीं है। स्त्री का भी पति में लव रहता है ना। पति का इतना नहीं होता है, जितना स्त्री का पति में होता है। वह तो दूसरी/तीसरी स्त्री कर लेते हैं। स्त्री का तो एक पति गया। बस। या हुसैन करती रहती है। पुरुषों के लिए तो एक जूती गई तो दूसरी/तीसरी जूती ले लेंगे। शरीर को जूती कहा जाता है ना। शिवबाबा का भी यह लांग बूट है। आत्मा का यह (शरीर) है जूती। अभी तुम बच्चे समझते हो हम बाबा को याद करेंगे तो फर्स्ट क्लास बनेंगे। कोई फेशनेबुल होते हैं तो जूतियाँ भी 4/5 रखते हैं। नहीं तो आत्मा की जूती एक है, पांव की भी जूती एक होनी चाहिए; परंतु यह एक फेशन पड़ गया है। अभी तुम समझते हो बाप से हम क्या वर्सा पाते हैं। गाते तो हैं ना, क्रिश्चियन भी कहते हैं 3000 वर्ष पैराडाइज़ था। अभी फिर हम उस पैराडाइज़ के मालिक बन रहे हैं। हेविन कहा ही जाता है वण्डर ऑफ वर्ल्ड। ज़रूर हेवनली गॉडफादर ही हेवन स्थापन करेंगे। अभी तुम प्रैक्टिकल में श्रीमत पर अपने लिए स्वर्ग़ की स्थापना कर रहे हो। यहां तो कितने महल आदि बनाते रहते हैं। यह तो सभी खत्म हो जावेंगे। तुम वहां क्या करेंगे। दिल में आना चाहिए यहां तो हमारे पास कुछ भी नहीं है। वैसे ही भल सह(यह) बाहर में, घर गृहस्थ में रहते हैं यह भी समझते हैं सभी कुछ बाबा का है। हमारे पास तो कुछ नहीं है। हम ट्रस्टी हैं। ट्रस्टी कुछ रखते नहीं हैं। बाबा ही मालिक है। यह सभी कुछ बाबा का है। घर में रहते भी ऐसे समझो। साहूकारों की बुद्धि में तो यह बातें आ न सके। बाबा कहते हैं ट्रस्टी हो रहो। लिखते हैं, बाबा मकान बनाऊँ? पूछते हैं, बाबा कहेंगे भल बनाओ। ट्रस्टी हो करो। बाप तो जीता बैठा है ना। बाप जावेंगे तो सभी इकट्ठे चले जावेंगे अपने घर। फिर तुम चले जावेंगे अपनी राजधानी में। मैं तो वहां ही रह जाऊँगा। हमको कल्प आना ही है पावन बनाने। अपने समय पर आता हूँ। भक्ति मार्ग में तो तुम इतने बड़े–2 मन्दिर बनते हो तो वहां तुम्हारे कितना अथाह धन होगा। तुमको सुख की मार्ज़िन जास्ती है। दुःख

बहुत थोड़ा है। तुम बच्चों को तो बड़ी खुशी होनी चाहिए अभी यह दुःख के दिन पूरे हुये। अभी हम ब्राह्मण बने हैं। फिर देवता बनेंगे। यह है ब्राह्मणों का कुल। जब तक ब्राह्मण न बने तब तक देवता बन न सके। कितना भी कोई माथा मारे तो बन न सकेंगे। ब्राह्मण ज़रूर बनना पड़े। कोई–कोई अपने मत पर दुकान निकाल बैठते हैं शिवबाबा पास जमा कुछ होता ही नहीं। अलग दुकान तो निकल न सके। यह तो शिवबाबा की अविनाशी बैंक है। वह सभी गवर्मेन्ट की बैंकें तो पाई–पैसे की हैं। यह तो बड़ी भारी अविनाशी बैंक है। जो फिर तुम 21 जन्म उस बैंक से खाते हो। बड़ी ज़बरदस्त अविनाशी बैंक है शिवबाबा की। ब्रह्मा की नहीं है। ब्रह्मा की होती तो ब्राह्मणों की भी होती। यह शिवबाबा की है। पैसा डालो तो कारुन का ख़ज़ाना मिल जाता; परंतु कई बच्चों को इतना नशा नहीं रहता है; इसलिए बाप को याद कर नहीं सकते हैं। कितनी खुशी रहनी चाहिए ओ हो बाबा। हम आधा कल्प स्वर्ग़ में रहेंगे। हीरे जवाहरों के महल होंगे। जड़ित के चित्र होते हैं उनकी कितनी वैल्यु होती है। वहां तो दीवालों आदि में भी यह हीरे जवाहर लगे रहते हैं। तुम कहेंगे इतने हीरे–जवाहर आदि कहां से आवेंगे? अरे तुम देवता बनेंगे तो तुमको सभी कुछ मिलेगा ना। तब वहां यह कपड़ पहनेंगे क्या। खानियाँ जो इस समय खाली हो गई हैं वह सभी भरतु हो जावेंगे। वहां तो ढेर के ढेर हीरे जवाहर आदि होते हैं। जैसे यहां ईंटें, पत्थर हैं वहां रियल होंगे। तो विचार करो हम यह शरीर छोड़कर हम प्रिंस जाकर बनेंगे। विश्व के मालिक बनेंगे। खुशी होनी चाहिए ना। बाप ने बेहद का वर्सा दिया है। जितना हम बाबा को बहुत याद करेंगे उतना वहां भी पहले–2 आवेंगे। फर्स्ट क्लास एयर कन्डीशन..... भी होते हैं ना। पैसे जास्ती हैं तो एयर कन्डीशन में भी बैठेंगे। यहां तो देखो म(भ)मा ने एक पाई भी जमा नहीं की। सिर्फ़ ज्ञान और योग था। कितना ऊँच पद पाती है। ग़रीबों को तो फ्री है। तो बाप समझाते हैं अपन को अच्छी रीत देखना है हमारे में कोई ख़ामी तो नहीं है। कोई तरफ बुद्धि तो नहीं जाती है। अगर बाप को याद करते रहेंगे तो फिर सभी ख़ामियाँ निकल जावेंगी। ऐसे मत समझो कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। नहीं। झट उनको निकालना चाहिए। भल कोई भी लवली चमर(ड़ी) हो। चमर(ड़ी) पर फिदा न होना है। यह चमर(ड़ी) चुहरी है। छी–छी है ना। इस पर क्या फिदा होना है। फिदा होना होता है आत्मा जो पवित्र होती है। शरीर पर नहीं। तुम सभी हरिजन हो। चमर(ड़ी) हरिजन है ना। इनको छोड़ना है ना। देह सहित देह के सभी सम्बंध यह है हरिजन। बाकी हरि अर्थात् दुःख हरने वाले साथ बुद्धि का योग लगओ। अगर किसके देह साथ बुद्धि योग है तो चुहरी साथ है। बाप कहते हैं देह के सभी धर्मों को छोड़ अपन को आत्मा समझो। आत्मा पवित्र हो रही है। शरीर तो अपवित्र है ना। यह पुरानी खल है। इनको क्या याद करना है। आत्मा पवित्र बनकर और पतित चहुरी(शरीर) को याद करे यह कहां की बात। यह शरीर पुराना है। मूत से बना हुआ है। अभी बाप कहते हैं देही अभिमानी भव। आत्मा–अभिमानी भव। देह के छी–2 सम्बंध सभी छोड़ो। तुम्हारी नम्बरवार कर्मातीत अवस्था हो जावेगी। फिर यह भ्रष्टाचारी शरीर खलास हो जावेंगी। फिर फर्स्ट क्लास शरीर मिलेंगे। अगर भ्रष्टाचारी शरीर से दिल होगी तो श्रेष्ठाचारी शरीर मिल न सके। बाप कहते हैं मुझे याद करो और कोई की भी याद न रहे। यह शरीर सभी चुहरी है। जिनकी आत्मा पवित्र नहीं वह तो चुहरी ही है। इसमें मेहनत करनी है। खुश नहीं होना है हमने बहुत अच्छा समझाया। बहुत प्रभावित हुआ। बाबा कहते हैं घर भी प्रभावित नहीं हुआ। सिर्फ़ तुम्हारी ही महिमा की। खुद को तो महिमा लायक नहीं बनाया ना। खुद समझे तब है बात। भल आवेंगे, हाथ जोड़ेंगे वह भी देह को देख जोड़ते हैं। बाप को थोड़े ही जानते हैं; इसलिए बाबा मिलते हैं तो भी अशरीरी हो बेहद में रहते हैं। दुनियाँ भूल जाती है। आत्मा को बैठ दृष्टि देते हैं। तो वह एकदम चुप हो जावेंगे। बात निकलेंगी नहीं। अच्छा मीठे–2 रूहानी सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप–दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।